शास्त्री द्वितीय खण्ड, राष्ट्रभाषा हिन्दी, अ० द्वि० – पत्र
निबंध माला
शीर्षक – 'गृत्समद'
लेखक - विनोबा जी

लघु उत्तरीय प्रश्नोत्तर –

प्रश्न : ऋषि गृत्समद गणित के किस सूत्र का आविष्कार किये थे?

उत्तर :- ऋषि गृत्समद उच्च कोटि के गणितज्ञ के साथ-साथ महान आविष्कारक भी थे। इसके पूर्व लोग जोड़-घटाव की विधियाँ ही जानते थे। जिस दिन इन्होंने गुणन पद्धति का आविष्कार किया उस दिन वे बहुत प्रसन्न हुए। इन्होंने दो से दस तक पहाड़े बनाए और खुशियों में पहाड़ों से ही इन्द्रदेव का आह्वान शुरू किया। हे इन्द्र तू दो घोड़ों के, चार घोड़ों के, छः घोड़ों के और दस घोड़ों के रथ में बैठकर आप आ जाँए। जल्दी से आप चले आईये। इस प्रकार ऋषि गृत्समद ने गुणन पद्धति का आविष्कार किया।

प्रश्न :- 'नक्षत्र विद्या' के सन्दर्भ में ऋषि गृत्समद के विचारों को स्पष्ट करें?

उत्तर :- ऋषि गृत्समद नक्षत्र विद्या के भी महान पंडित थे। उनकी धारणा थी कि चन्द्रमा का प्रभाव गर्भस्थ शिशु पर भी पड़ता है। चन्द्रमा में मातृ वृत्ति रम गई है। वह अपनी कलाओं द्वारा सूरज की किरणों को पचाकर, उन्हें भावनामय सौम्य रूप देकर माता के गर्भ में रहने वाले कोमल शिशु तक उस जीवनामृत को प्रेम एवं कुशलता के साथ पहुँचाता है और यह कार्य वह निरन्तर करता रहता है। गृत्समद का यह आविष्कार इतना पेचीदा है कि इसमें परावृत्त किरण-विज्ञान और मनोविज्ञान तीनों का समन्वय हो गया है। इसलिए आज तक इस सूत्र की पूरी व्याख्या नहीं हो सकी है।

चन्द्रमा की कलाओं की पूर्णता पूर्णिमा को होती है। इसका प्रभाव भी गर्भ पर पड़ता है।

डॉ० देव चरण प्रसाद
एसो० प्रो० हिन्दी
रा० कृ० सँ० महावि० सुरसैना, पूर्णियाँ
04/10/20

महिलाओं की बाल स्मृतियाँ भी जाग उठती हैं।"

इस प्रकार हम देखते हैं कि मुंशी प्रेमचन्द के उपन्यासों में देशकाल और वातावरण का विस्तार से चित्रण हुआ है। कहा भी कहा गया है कि तत्कालीन साहित्यिक रचनाओं पर देशकाल और वातावरण का प्रभाव अवश्य पड़ता है। प्रेमचन्द का उपन्यास भी इससे अछूता नहीं है।

डॉ० देव चरण प्रसाद 04/10/20
एसो० प्रो० हिन्दी
रा० उ० सं० महा वि० सुखसेना, पूर्णियाँ

शास्त्री प्रथम खण्ड, राष्ट्रभाषा हिन्दी, अ०द्वि०-पत्र

'निर्मला' उपन्यास

लेखक- प्रेमचन्द

प्रश्न:- देश काल और वातावरण की दृष्टि से प्रेमचन्द की उपन्यास कला की समीक्षा कीजिए।

उत्तर:- उपन्यास सम्राट मुंशी प्रेमचन्द के उपन्यासों में भारतीय जीवन और समाज का विस्तृत चित्रण हुआ है। प्रायः भारतीय समाज की कोई भी प्रवृत्ति अछूती नहीं रही है। अन्य किसी उपन्यासकार में भारतीय समाज और भारतीय जीवन का ऐसा व्यापक चित्रण नहीं मिलता है। हिन्दी में लिखी गयी उनके उपन्यासों में प्रत्येक वर्ग के जीवन का यथार्थ चित्रण हुआ है।

तत्कालीन राजनीतिक संघर्ष और स्वतंत्रता-आन्दोलन की घटनाओं से उनके उपन्यास भरे पड़े हैं। अहिंसात्मक जन-आन्दोलन, किसान, मजदूर-आन्दोलन, उग्रवादियों के आतंकवादी कार्य आदि का व्यापक चित्रण उनके उपन्यासों में हुआ है। देशोद्धार और समाज-सुधार की धारा प्रायः प्रत्येक उपन्यास में प्रवाहित हुई है। इन सबके ऊपर शोषक और शोषित वर्ग का संघर्ष उभर कर ऊपर आ गया है।

वातावरण को सजीवता प्रदान करने के लिए मुंशी प्रेमचन्द ने अपने उपन्यासों में प्रकृति के भी अनेक सुन्दर चित्र प्रस्तुत किये हैं। प्रेमचन्द ने प्रकृति के अलंकृत चित्र बड़े कौशल से प्रस्तुत किये हैं। वर्षा ऋतु और उसमें पड़े हुए झूलों का एक चित्र इस प्रकार है— " बरसात के दिन हैं, सावन का महीना, आकाश में सुनहरी घटाएँ छायी हुई हैं। रह-रहकर रिम-झिम वर्षा हो रही है। अभी तीसरा पहर है, पर ऐसा मालूम हो रहा है, शाम हो गई। आमों के बागों में झूला पड़ा हुआ है। लड़कियाँ भी झूल रही हैं और उनकी माताएँ भी। दो-चार झूल रही हैं, दो-चार झूला रही हैं, कोई कजली गाने लगती है, कोई बारहमासी। इस ऋतु में

शेष आगे-

उपशास्त्री, राष्ट्रभाषा हिन्दी, अ०द्वि०-पत्र
दिगंत-भाग-2, पद्य खण्ड

Date _____ Page _____

शीर्षक - 'छप्पय'
कवि - नाभादास

उक्ति चौज, अनुप्रास, वरन, अस्थिति, अतिभारी।
वचन प्रीति, निर्वाही, अर्थ अद्भुत तुकधारी॥
प्रतिबिंबित दिवि दृष्टि हृदय हरि-लीला भासी।
जनम कर्म गुन रूप सबहि रसना परकासी॥
विमल बुद्धि होत जुकी, जो वह गुन श्रवननि धरै।
सूर कवित सुनि कौन कवि, जो नहि सिरचालन करै॥

भावार्थ

भक्त कवि संत नाभादास जी कहते हैं कि सूरदास की कविता सुनकर कौन ऐसा कवि है जो उनके साथ हामी नहीं भरे। सूरदास की कविता में श्रीकृष्ण की लीला का वर्णन है। उन के जन्म से लेकर स्वर्ग-धाम की लीलाओं का मुक्त गुणगान किया गया है। उनकी कविता में क्या नहीं है! गुण-माधुरी और रूप-माधुरी सब कुछ भरी हुई है। सूरदास की की दृष्टि दिव्य थी। वही दिव्यता उनकी कविताओं में भी प्रतिबिंबित है। गोप-गोपियों के संवाद में अद्भुत प्रीति का निर्वाह दिखाई पड़ती है। शिल्प की दृष्टि से उक्ति-वैचित्र्य, वर्ण्यवैचित्र्य और अनुप्रासों की अनुपम छटा सर्वत्र दिखाई पड़ती है।

डॉ० देव चरण प्रसाद
एसो० प्रो० हिन्दी
रा०उ०सं० महावि० सुरवसेना, पूर्णियाँ